'रिवणावायली मुंगी' कथा-संग्रह में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण

वासुदेव सावंत

मराठी में हर वर्ष सैकड़ों-हजारों की संख्या में किताबें प्रकाशित होती हैं। एक जमाने में मराठी प्रकाशन-व्यवसाय मुंबई और पूना जैसे महानगरों में ही केंद्रित था। लेकिन पिछले 15-20 बरसों में बड़े शहरों से लेकर महाराष्ट्र के तहसीलनुमा छोटे शहरों-गांवों तक वह फैल चुका है। इसलिए प्रकाशित होती हुई किताबों की संख्या भी हर साल बढ़ती रहती है। इन प्रकाशनों में साहित्य और साहित्य से संबंधित किताबों की संख्या अर्थात् सबसे ज्यादा होती है। हर साल प्रकाशित होती हुई कृतियों में से साहित्यकला की दृष्टि से अच्छी किताबों का चयन एक कठिन बात है। मराठी में 'ललित' जैसी पत्रिका हर महीने की तीन-चार सर्वोत्कृष्ट साहित्यकृतियों का चयन 'महीने की लक्ष्यबेधी किताबें' इस नाम से करती है। लेकिन सभी पाठक शायद ही इस चयन से सहमत हो सकते हैं। वास्तव में देखा जाए तो हर साल प्रकाशित होती हुई अनेक साहित्यकृतियों में से पाठकों को प्रभावित करने वाली, दीर्घकाल तक उनके मन पर छानेवाली और मराठी साहित्यपरंपरा में अपना कुछ योगदान करनेवाली साहित्यकृतियां बहुत ही कम होती हैं। 2003 में भी ऐसी कुछ गिनी-चुनी कृतियों का मराठी साहित्य को काव्य, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 2003 में प्रकाशित ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण साहित्यकृति के बारे में मैं यहां चर्चा करने जा रहा हूं। मेहता पब्लिशिंग हाऊस द्वारा प्रकाशित यह मराठी किताब है 'रिवणावायत्री मुंगी' (एक चींटी, भीड़ से अलग)। डॉ. राजन गवस द्वारा लिखी गई कहानियों का यह संकलन है।

राजन गवस समकालीन मराठी के एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। 'चौंडकं', 'भंडारभोग', 'धिंगाणा', 'कळप' और 'तणकट' इन उपन्यासों द्वारा मराठी उपन्यास-विधा के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। राज्य पुरस्कारों सहित मराठी के कई प्रतिष्ठित सम्मान तथा बहुमूल्य राष्ट्रीय पुरस्कारों द्वारा उनके इस योगदान को सराहा गया है। एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार के रूप में समकालीन मराठी में यद्यपि वह स्थापित हो चुके हैं, लेकिन उपन्यास के साथ-साथ मराठी कहानी के क्षेत्र में भी उनका कार्य मौलिक रहा है। सत्यकथा, किर्लोस्कर, साप्ताहिक सकाळ आदि प्रतिष्ठित मराठी पत्रिकाओं में उनकी अनेक सशक्त कहानियां पिछले 25 सालों से प्रकाशित हुई हैं। उनकी कुछ कहानियां हिंदी और अंग्रेजी में भी अनुवादित हुई हैं। 'रिवणावयत्री मुंगी' उनकी कुछ चुनी हुई कहानियों का संकलन है।

राजन गवस साठोत्तर काल के मराठी के एक प्रतिनिधिक लेखक है। 1960

के बाद मराठी साहित्य में एक मौलिक परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का कारण केवल साहित्यिक या वाङ्मयीन नहीं, बल्कि इस परिवर्तन की जड़ें साहित्य के बदले हुए सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में हैं। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का प्रसार सुदूर-गांवों और समाज के विभिन्न स्तरों तक होने के कारण बहुविध समाजस्तर जागृत हुए। उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक आत्म-पहचान प्राप्त होने लगी। सैकड़ों बरसों से मूक रहे, प्रस्थापित धारा से अलग रहे समाजस्तर अब बोलने लगे, अपने अनुभवों-विचारों को अभिव्यक्त करने लगे। इसका साहित्यक्षेत्र में यह परिणाम रहा कि मराठी साहित्य-व्यवहार केवल कुछ शहरों तक या सफेदपोश मध्यवर्ग तक ही सीमित न रहकर भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से व्यापक हो गया। साहित्य का विकेंद्रीकरण होने लगा। समाज के जिन समूहों में कभी लिखने या पढ़ने की परंपरा ही नहीं थी ऐसे समूहों में साहित्य के पाठक और लेखक निर्माण होने लगे। इन लेखकों द्वारा लिखे गए साहित्य में उनके समूह से जुड़े सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति होने लगी। समूह की मानसिकता और समूह के जीवनमूल्यों का आविष्कार होने लगा। साहित्य में प्रस्थापित उच्चवर्गीय तथा नागरी चेतना का प्रभाव कम होकर बहुजनचेतना, दलित चेतना और नारी चेतना मराठी साहित्य निर्मिती के प्रमुख प्रेरणास्रोत बने। प्रस्थापित मध्यवर्ती साहित्यधारा से अपनी अलग पहचान बनानेवाले दलित साहित्य और ग्रामीण साहित्य का आंदोलन के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। आज दलित और ग्रामीण साहित्य को आंदोलन का रूप भले ही न रहा हो, लेकिन दलित जीवन यथार्थ के साथ-साथ ग्रामीण तथा आंचलिक यथार्थ और परिवेश समकालीन मराठी साहित्य के अभिन्न अंग बन चुके हैं। मराठी में कभी प्रादेशिक (आंचलिक) साहित्य और ग्रामीण साहित्य मराठी साहित्य की अलग विधा मानी जाती थी, लेकिन आज के मराठी साहित्य का स्वरूप देखें, तो ऐसी कोई अलग साहित्यविधा मानने की जरूरत नहीं है। आज के अधिकतर मराठी लेखक गांवों में उपजे-पले और गांव के यथार्थ और चेतना को साहित्य से मुखरित करनेवाले होने के कारण ग्रामीण चेतना ही मराठी साहित्य की मुख्यधारा बन चुकी है।

गांव के यथार्थ को, गांव के लोगों की समस्याओं को, उनके दुःखों-वेदनाओं को साहित्य द्वारा अत्यंत प्रभावी रूप में व्यक्त करनेवालों में राजन गवस आज के एक महत्त्वपूर्ण लेखक हैं। उपन्यासों की तरह उनकी कहानियां भी ग्रामीण यथार्थ के विविध आयाम व्यक्त करती हैं। इन कहानियों का आंचलिक परिवेश दक्षिण-पश्चिम महाराष्ट्र है। इस प्रदेश विशिष्टता को राजन गवस की कहानियां शब्दरूप देती हैं। 'रिवणावायली मुंगी' में सम्मिलित उनकी सभी कहानियां इस प्रदेश के गांव के विविध लोग, व्यक्ति, गांव के लोगों की मानसिकता, गांव का आज का बदलता हुआ रूप, वहां की कृषिप्रधान संस्कृति, वहां की परंपराएं, रीतिरिवाज आदि का चित्रण करते हुए गांव के यथार्थ को व्यापक और सूक्ष्म रूप में प्रकट करती हैं। परंपरागत रूप से गांव का जीवन कृषि केंद्रित होता है। किसान और खेतीहर मजदूरों, कृषि संबंधित अन्य काम करनेवालों से ही ग्रामीण समाज बना होता है। राजन गवस की बहुतांश कहानियों के पात्र किसान परिवार से ही जुड़े हुए हैं। लेकिन 'रिवणावायली मुंगी' में उनकी कुछ कहानियां किसान परिवार की आज की स्थिति, उनकी समस्याओं का प्रभावी ढंग से चित्रण करती हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय कृषिक्षेत्र में विकास अवश्य हुआ, हरित क्रांति के नारे भी लगाए गए थे; लेकिन स्वतंत्रता के पचास बरसों बाद भी बहुतांश भारतीय किसान दारिद्र्य जैसी उसी पुरानी समस्याओं से पीड़ित हैं। विशेषतः आज की उद्योग प्रधान व्यवस्था में सामान्य किसान एक उपेक्षित और दुर्बल घटक बन चुका है। किसान की इस दुर्बलता को 'उचकी' (हिचकी) नामक कहानी में लेखक ने बड़े सहानुभाव से दर्शाया है। 'हमारा घर याने गरीबी का कोठार' इस वाक्य से ही कहानी का प्रारंभ होता है। खेत में जो उपज होती है उस पर इस किसान परिवार का चार-छह महीने ही गुजारा हो सकता है। इसलिए परिवारवाले दूसरों के यहां मजदूरी करने के लिए मजबूर हैं। लड़की शादी के उम्र की हो गई है, लेकिन शादी के बजाय उसे मजदूरी करना ही नसीब है। बड़ा लड़का पढ़ा-लिखा होकर भी नौकरी के बिना बेकार है। इसलिए अगतिक होकर 'अस्सल इंद्रजाल' नामक जादूटोना, मंत्रतंत्र सिखानेवाली किताब पढ़कर वह घर की समृद्धि के लिए, दारिद्र्य हटाने के लिए उस किताब में दिए गए जादुई, तांत्रिक उपायों को प्रयोग में लाता है। लेकिन ऐसे जादुई उपायों से किसान परिवार की हालत सुधारना संभव नहीं है, इसलिए पूरा किसान परिवार निराशा के गहरे अंधेरे में डूब जाता है।

गांव का किसान इस तरह दारिद्र्य के कारण परिस्थितिवश अंधश्रद्धालु बनकर अपने नसीब पर निर्भर करने लगता है, तो दूसरी ओर गांव के अनेक किसानों को अपनी उपजीविका

के लिए गांव छोड़कर शहर जाना पड़ता है। जीने के लिए शहर पर निर्भर करनेवाले किसान परिवार के व्यक्ति की कथा 'संप', 'अंधाखड' जैसी कहानियों में चित्रित हुई है। मुंबई में कपड़ा मिलों का उद्योग जब तेजी में था तब इन मिलों में काम करने के लिए ज्यादातर मजदूर पश्चिम महाराष्ट्र के गांवों-देहातों से आते थे। 'संप' कहानी का नायक पांडू भी अपने गांव के अन्य कई लोगों की तरह मुंबई की मिल में काम करता है। नौकरी में मिले पैसों से गांव के अपने किसान परिवार की मदद भी करता है। मिलों में हड़ताल शुरू होने के बाद हड़ताल समाप्त होने तक कुछ दिनों के लिए पांडू गांव वापस आता है। मिलें हमेशा के लिए बंद होती हैं और पांडू को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। किसान परिवार का होकर भी अनेक वर्ष मुंबई में रहने से पांडू को खेतों में काम करने की आदत नहीं है। मिल में नौकरी करके वह शहरीबाबू बन चुका है। पांडू का बेकार होना, उसका निठल्लापन उसके संयुक्त परिवार में दरारें पैदा करता है और परिवार से विभक्त हुए पांडू को अपना घर संसार स्वतंत्ररूप में खड़ा करना और संवारना मुश्किल होता है। 'संप' इस प्रकार उध्वस्त होते हुए किसान परिवार की कहानी है।

किसान की परिस्थितिवश अगतिकता का 'अंधाखड' कहानी में आया हुआ चित्रण पाठकों के मन को स्पर्श करता है। परिस्थिति के कारण किसान परिवार के छोटे लड़कों को भी फूलने का, खेलने-कूदने का मौका नहीं मिलता। 'अंधाखड' कहानी में गांव के किसान के लड़के को शहर के एक लॉज में रूम बॉय की नौकरी करनी पड़ती है। इस लॉज में चोरी-छुपे वेश्या व्यवसाय चलता है। गांव के इस अजाण लड़के को स्त्री-पुरुष संबंध का घृणित रूप लॉज पर देखने को मिलता है। लॉज के उस माहौल में वह ऊब जाता है। ऐसे गंदे माहौल में काम करने की अपनी मजबूरी समझ सकता है, लेकिन वह आखिरकार नौकरी छोड़ गांव वापस जाता है। 'अंधाखड' कहानी इस तरह से एक ओर लॉजिंग व्यवसाय के असली यथार्थ को उजागर करती है, तो दूसरी ओर गांव के किसान की आर्थिक स्थिति को, उसकी मजबूरी को रेखांकित करती है।

किसानों की हालत, उनकी समस्याओं का चित्रण करने वाली कहानियों के साथ-साथ गांव के आज के बदलते हुए रूप का, इस बदले हुए रूप का गांव वालों की मानसिकता पर हुए परिणामों का दर्शन भी 'रिवणावायली मुंगी' की अनेक कहानियों से होता है। भारतीय स्वातंत्र्य के बाद गांव की पारंपरिक जीवन में धीरे-धीरे बदलाव आना शुरू हो गया; विशेषतः पिछले बीस-पच्चीस वर्षों में गांव का रूप बड़ी तेजी से बदला है। गांवों का आज आधुनिकीकरण हो रहा है। शिक्षा-प्रसार के कारण आधुनिक विचार और आधुनिक मूल्य गांवों में आ रहे हैं। कुछ गांवों में तो कॉलेज भी खुले हैं, गांव के लड़के, लड़कियां ग्रेज्युएट्स हो रही हैं। सोच-विचार करने की उनकी पारंपरिक मानसिकता बदल रही है। दूसरी ओर गांव औद्योगिकीकरण से भी प्रभावित होने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों में महाराष्ट्र के ग्रामीण जीवन में साइबर-उद्योग ने बहुत बड़ा परिवर्तन किया है। औद्योगिकीकरण से गांव केवल कृषिकेंद्रित ही नहीं रहे। गांव के लोगों का केवल कृषि-व्यवसाय पर ही निर्भर रहना कम हो गया। गांव के शिक्षित लोग गांव के आसपास की शुगर-फैक्टरीज में, स्कूल-कॉलेजों में; तहसील और जिले के कार्यालयों में नौकरी करके नौकरीपेशा और सफेदपोश बन गए। नौकरी के कारण उनके हाथ में नियमित रूप से पैसा आने लगा तो उनमें से कुछ लोग ऐशोआराम की जिंदगी जीने के लिए उपभोगवादी प्रवृत्ति के गुलाम हो गए। 'बाई' कहानी के मुख्य पात्र नाग्या और शेक्या ऐसे उपभोगवादी बने हुए हैं। शुगर फैक्टरी के ऑफिस में काम करनेवाले दोनों का बचपन गांव में दारिद्रय में बीता है; लेकिन सुख बटोरने के लिए अब वह छंदी-फंदी जीवन जीना चाहते हैं। सुख की इस लालसा में व्यसनी, नशेबाज बनकर उनका नैतिक पतन होने से अंततः दोनों भी सुख चैन की जिंदगी नहीं जी सकते।

गांव के आधुनिकीकरण में कुछ लोग इस तरह उपभोगवादी बने हैं, तो कुछ लोगों की मानसिकता ही मध्यमवर्गीय, शहरी बन चुकी है। नई जीवनपद्धति को अपनाते समय गांव के लोगों का इस तरह अपनी गांव से, अपनी मिट्टी से, अपनी भूमिनिष्ठ संस्कृति से टूटना आज के बदलते हुए ग्रामीण यथार्थ का एक महत्वपूर्ण अंग है। काल के साथ होते हुए परिवर्तनों और प्रभावों से कोई व्यक्ति अलग नहीं रह सकता, लेकिन इन प्रभावों के कारण अपनी देशी-संस्कृति और देशी मूल्यों से पूरी तरह से अलग होने में भी जिंदगी की कोई अर्थपूर्णता नहीं होती। अपनी भूमिनिष्ठ संस्कृति के प्रमाणकों को कायम रख के बाहर के मूल्यों और प्रभावों को आत्मसात करना ही देशीकरण है, यह देशीवादी सिद्धांत का मुख्य विचार है। राजन गवस अपनी कहानियों में इसी देशीवादी दृष्टिकोण से गांव

के आज के बदलते हुए माहौल का आकलन प्रस्तुत करते हैं।

अपनी कृषिजनसंस्कृति से अलग होकर शहरी बने गांव के पात्रों का चित्रण 'ढव्ह आणि लख्ख ऊन' और 'एक होता कावका' इन कहानियों में हुआ है। गांव की कृषिकेंद्रित मानसिकता और गांव से टूटनेवालों की शहरी, मध्यवर्गीय मानसिकता का संघर्ष बहुत ही प्रभावी ढंग से 'ढव्ह आणि लख्ख ऊन' कहानी में दिखाया गया है। नौकरी के कारण शहर में बसा हुआ इस कहानी का नायक अपने जीवन से गांव के सारे संदर्भ और संस्कार--यहां तक कि मां-बाप ने रखा हुआ अपना नाम भी हटाना चाहता है। दूसरी ओर उसके मां-बाप की जड़ें प्रकृति (निसर्ग) को मानवी जीवन का ही अंग माननेवाली गांव की संस्कृति और मूल्यों में गढ़ी हुई हैं। उनकी कृषिसंस्कृतिजन्य मानसिकता और गांव से टूटे हुए नायक की कृत्रिम शहरी मानसिकता का संघर्ष छोटे-छोटे प्रसंगों और तफशिलों द्वारा कहानी में खड़ा किया गया है। कृषि संस्कृति का समर्थन करनेवाली लेखक की देशीवादी दृष्टिकोण का स्पष्ट आविष्कार 'ढव्ह आणि लख्ख ऊन' इस प्रतीकात्मक शीर्षक की कहानी से होता है। आधुनिक शहरी जीवनपद्धति को अपनाकर कुछ लोग गांव से पराए बन जाते हैं, लेकिन संवेदनशील आदमी को इस बदलते माहौल में अपनी जड़ें गांव की भूमि से अलग करना कठिन होता है। अपनी भूमिनिष्ठ संस्कृति से अलग होकर आधुनिक माहौल में खुद को ढालना उनकी मजबूरी होती है। इसी मजबूरी के कारण संत्रस्त हुए आदमी की कहानी है 'एक होता कावका'। देशी दृष्टिकोण का प्रत्यय देती हुई इस कहानी में लेखक ने यथार्थवाद और फेंटसी का कलात्मक मिश्रण किया है।

अपनी ही भूमिनिष्ठ संस्कृति से टूटना गांव के आधुनिकीकरण का, शहरीकरण का एक अंग है, लेकिन इसके साथ-साथ आधुनिकीकरण का दूसरा भी अंग है, जो ग्रामीण समाज के विकास की दृष्टि से उपयुक्त है। आधुनिकता में विवेकवादी मानवी मूल्य भी निहित होते हैं। इन मूल्यों के आधार पर गांव की परंपरागत समाजव्यवस्था को आलोचनात्मक चिकित्सक दृष्टि से देखा जा सकता है। व्यक्ति विकास की दृष्टि से हानिकारक गांव की रूढ़ि-परंपराएं, रीति-रिवाज, जातीयता, सामाजिक उच्च-नीच भाव, धार्मिक अंधश्रद्धा आदि के खिलाफ संघर्ष करके ग्रामीण समाज को बदला जा सकता है। महाराष्ट्र में ऐसे ही कुछ परिवर्तनवादी सामाजिक आंदोलन सत्तर के दशक में सक्रिय थे, जो गांवों तक पहुंचे थे। राजन गवस की कुछ कहानियों में गांव तक पहुंचे ऐसे आंदोलनों का संदर्भ भी आता है। उनकी कहानियों के अनेक पात्र--विशेषतः युवा पात्र- परिवर्तनवादी आंदोलन से जुड़े हुए हैं। इस संग्रह की 'दादा कोतोलीकर' शीर्षक की कहानी में आंदोलन से जुड़े एक प्रामाणिक युवा कार्यकर्ता का और उसके परिवार को बर्बाद करनेवाले आंदोलन के दांभिक और नैतिक दृष्टि से भ्रष्ट नेता का लेखक ने उपहासपूर्ण शैली में चित्रण किया है।

नारी जीवन का; पीड़ित-कुंठाग्रस्त स्त्री की मानसिकता का चित्रण राजन गवस की कहानियों की एक प्रमुख विशेषता है। पुरुषप्रधान व्यवस्था में पीड़ित-शोषित नारी की असहायता और वेदना एक ओर उनकी कहानियों से मुखर होती है, तो दूसरी ओर समाज की रूढ़ि-परंपराओं से संघर्ष करने वाले स्वतंत्र व्यक्तित्व के नारी पात्र कुछ कहानियों के प्रमुख विषय बने हुए हैं। 'बाई', 'हुंदका', 'घुसमट' गांव की व्यवस्थापीड़ित महिलाओं की दुःखों की कहानियां हैं, तो 'रिवणावायली मुंगी', 'तिच्या वळणाची गोष्ट' और 'झक' कहानी की नायिकाएं ग्रामीण समाज में रूढ़ नारी प्रतिभा को धक्का देती हुई समाज से संघर्ष करती हैं। 'बाई' कहानी की कमली अपने अत्याचारी, राक्षसी पति के कारण निराश्रित हो जाती है, और अंततः बेबस होकर अपना शील बेचने के सिवा जीने का कोई मार्ग उसके सामने नहीं रहता। नारी की वेदना के साथ-साथ नारी को केवल उपभोग की वस्तु माननेवाली पुरुष की दृष्टि का प्रत्ययकारी चित्रण कहानी में हुआ है। ग्रामीण समाज के पारंपरिक रिवाज और मूल्यों के कारण 'हुंदका' और 'घुसमट' कहानी की नायिकाएं अपने प्राकृतिक भावना-प्रेरणाओं का समाधान भी ढूंढ़ नहीं सकती। 'हुंदका' में नारी की कुंठा का कारण बना सामाजिक यथार्थ प्रभावी है, तो 'घुसमट' में मानसशास्त्रीय यथार्थ का चित्रण प्रमुख है। झोंपड़े में रहने वाली 'झळ' कहानी की लगभव्वा विधवा है, लेकिन बेबस नहीं। परिवार चलाने के लिए वह शराब बेचने का धंधा करती है। पुरुषप्रधान समाज में दबकर न रहनेवाली वह हिम्मतबाज और निर्भीक औरत है। उसके खिलाफ पुलिस में तझार करनेवाले बवन्या जैसे पुरुष को उसके घर जाकर वह पीटती है। गांव की मुक्त स्त्री का एक अनोखा दर्शन 'झळ' कहानी की लगभव्वा के रूप में होता है।

'रिवणावायली मुंगी' और 'तिच्या वकणाची गोष्ट' नारी चेतना का आविष्कार करनेवाली इस संग्रह की महत्त्वपूर्ण

कहानियां हैं। कॉलेज तक पढ़ी हुई इस कहानी की नायिकाएं आधुनिक विचार और विवेकवादी (Rationalist) मूल्यों से संस्कारित हुई है। गांव के सामाजिक यथार्थ को चिकित्सक दृष्टि से देखनेवाली यह युवतियां स्वतंत्र विचार करनेवाली और अपने जिंदगी के निर्णय खुद लेनेवाली है। गांव की पारंपरिक समाजव्यवस्था में ऐसी लड़कियां आऊटसायडर्स ही होती हैं। समाजपरिवर्तन के आंदोलन में दोनों भी कुछ काल सक्रिय रही हैं। विद्रोही मानसिकतावाली इन दोनों युवतियों को व्यवस्था के सामने आखिरकार झुकना ही पड़ता है; लेकिन अपने संघर्षशील और विद्रोही स्वभाव को बदलना उनके लिए मुश्किल है। उनकी इस संघर्षशीलता के कारण घरवालों की दृष्टि से दोनों का जीवन व्यर्थ हुआ है। नारी के संघर्षशील व्यक्तित्त्व का रेखांकन इन दोनों कहानियों में बड़ी सूक्ष्मता से किया गया है और साथ ही साथ आज कालबाह्य होती हुई गांव की परंपराएं, रीति-रिवाज, संस्कार, जातीयता, सामाजिक उच्च-नीचता आदि का खोखलापन भी बखूबी दिखाया गया है।

'रिवणावायली मुंगी' में समाविष्ट राजन गवस की कहानियां इस प्रकार विविध आशयसूत्रों द्वारा आज के गांव का, ग्रामीण जीवन और संस्कृति का चित्र यथार्थवादी ढंग से पेश करती हैं। गांव की संस्कृति की एक अलग पहचान लेखक महत्त्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन गांव को देखने की उनकी दृष्टि नॉस्टैलिजक या गौरव पर नहीं है। वह एक ओर गांव की भूमि से, अपनी देशीयता से जुड़े रहना भी चाहते हैं और दूसरी ओर मनुष्य के व्यक्तित्व को दबानेवाली गांव की अनिष्ट रूढ़ि-परंपराओं की और व्यवस्था की तीखे स्वर में आलोचना भी करते हैं। मानवी जीवन की त्रुटियां और विसंगति को रेखांकित करके लेखक अपनी जीवनदृष्टि का परिचय देते हैं। गांव की सामाजिक अंतःप्रवाहों का लेखक का आकलन और निरीक्षण सूक्ष्म है। गांव के उपेक्षित, पीड़ित लोगों के दुःखों को शब्दबद्ध करने में लेखक राजन गवस की रुचि अधिक है। मानवी दुःखों की अभिव्यक्ति करते हुए लेखक की दृष्टि का व्यापक सहानुभाव व्यक्त होता है। यथार्थ का प्रत्ययकारी चित्रण और जीवनाकलन की यथार्थवादी भूमिका व्यक्त करने के लिए राजन गवस अपनी कहानियों में ग्रामीण भाषा का बहुत ही प्रभावी उपयोग करते हैं। ऐसी कुछ विशेषताओं के कारण सामाजिकता का यथार्थ अंकन करनेवाला डॉ. राजन गवस का कहानी संग्रह 'रिवणावायली मुंगी' मराठी कहानी लेखन में एक मौलिक योगदान कहा जा सकता है।

शुभकामनाओं के साथ

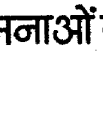

रोहन मल्टीग्राफिक्स प्रा. लि.

जुझे फाल्कांव रोड, चर्च के पास, पणजी-गोवा

मल्टीकलर प्रिंटिंग, लेटर हेड, विजिटिंग कार्ड, विवाह
आमंत्रण-पत्र आदि उचित दरों पर शीघ्र उपलब्ध।
कृपया अवश्य पधारें।